B. Com. (HONS)
P2 – A/cs (H)
Paper – IV
CORPORATE ACCOUNTING
Date – 15.05.2020

प्रो० धनंजय कुमार
सहायक प्राध्यापक
वाणिज्य विभाग
V.S.J. महाविद्यालय
(राजनगर मधुबनी)

UNIT – III
TOPIC – ACCOUNTING FOR AMALGAMATION

TYPES OF AMALGAMATION

AS-14 के अनुसार एकीकरण के प्रायः दो प्रकार निश्चित किए गए हैं :—

(1) विलय के स्वभाव में एकीकरण (Amalgamation in the Nature of Merger) :— किसी भी कंपनी के एकीकरण को विलय के स्वभाव का एकीकरण तब माना जाएगा जब निम्नलिखित पाँच शर्तों का पालन किया जाता हो —

(a) हस्तांतरक कंपनी की सभी संपत्तियाँ एवं दायित्व एकीकरण के बाद हस्तांतरी कंपनी के हो जाते हैं।

(b) हस्तांतरक कंपनी के समता अंशों के [redacted] अंकित मूल्य के कम से कम 90% अंशधारी कंपनी के समामेलन के बाद हस्तांतरी कंपनी के अंशधारी बन जाते हैं।

(c) एकीकरण के पश्चात् हस्तांतरी कंपनी द्वारा हस्तांतरक कंपनी के [redacted] समता अंशधारियों को प्रतिफल का भुगतान पूर्णतः समता अंशों में किया जाय परन्तु अपूर्ण अंशों के बदले नकदी में भुगतान किया जाय।

Scanned with CamSc

(d) हस्तान्तरी कंपनी एकीकरण के बाद भी हस्तान्तरक कंपनी के व्यवसाय को चालू रखे तथा

(e) एकीकरण के पश्चात हस्तान्तरी कंपनी हस्तान्तरक कंपनी की सम्पत्तियों एवं दायित्वों को अपनी पुस्तक में पुस्तकीय मूल्य (Book Value) पर ही प्रदर्शित करे।

(2) क्रय के स्वभाव में एकीकरण (Amalgamation in the Nature of Purchases) :— विलयन के स्वभाव के एकीकरण के संदर्भ में दी गई पांच शर्तों में से कोई एक या अधिक शर्त की पूर्ति एकीकरण में नहीं होती है तब ऐसे एकीकरण को क्रय के स्वभाव में एकीकरण माना जाता है। इस स्थिति में किसी एक कंपनी द्वारा दूसरे कंपनी को पूर्ण रूप से क्रय कर लिया जाता है तथा आपसी समझौते के आधार पर निर्धारित किए गए प्रतिफल का भुगतान अंशों, ऋणपत्रों या नकदी में या इनमें से किसी एक या समग्र रूप में किया जा सकता है। इस स्वभाव के अनुसार हस्तान्तरक कंपनी का अस्तित्व समाप्त हो जाता है।

एकीकरण के लिए लेखांकन
ACCOUNTING FOR AMALGAMATION

एकीकरण के लिए लेखांकन व्यवहार के अंतर्गत मुख्यतः दो कार्यों को किया जाता है —

(1) क्रय प्रतिफल का निर्धारण

(2) लेखांकन की पद्धति

(1) क्रय प्रतिफल का निर्धारण (Computation of Purchases Consideration) :— AS-14 के अनुसार, एकीकरण के पश्चात दिये गये प्रतिफल का अर्थ उन अंशों, प्रतिभूतियों एवं नकद या राशी से होता है जो हस्तान्तरी कंपनी द्वारा हस्तान्तरक कंपनी के अंशधारियों के लिए दिए जाते हैं।

Scanned with CamSc

क्रय प्रतिफल की गणना निम्नलिखित विधियों में से किसी एक विधि के द्वारा किया जाता है —

(a) एकमुश्त भुगतान विधि (Lump-sum Payment Method) :— इस विधि के अनुसार क्रय प्रतिफल की राशि समझौते के अनुसार निर्धारित की जाती है, तथा सवाल में एक-मुश्त राशि के रूप में यह दी रहती है, जिसका भुगतान हस्तांतरी कंपनी द्वारा हस्तांतरक कंपनी को किया जाता है।

(b) शुद्ध भुगतान विधि (Net Payment Method) :— इस विधि के अनुसार हस्तांतरक कंपनी द्वारा समता व पूर्वाधिकार अंशों, अंशधारियों के दावों के हेतु चुकता किये गए अंशों, ऋणपत्रों एवं नकदों का कुल योग होता है। इसके अंतर्गत ऋणपत्रधारियों को किया गया भुगतान क्रय प्रतिफल का हिस्सा नहीं माना जाता है अर्थात् क्रय प्रतिफल की गणना करने में बाह्य दायित्वों को शामिल नहीं किया जाता है।

(c) शुद्ध सम्पत्ति रीति (Net Assets Method) :— इस विधि के अनुसार क्रेता कंपनी द्वारा ली गई संपत्तियों के पुनर्मूल्यांकित मूल्यों के योग में से current Liabilities को जिन्हें लिया गया है, घटा दिया जाता है। इस प्रकार अंतर राशि ही क्रय प्रतिफल होता है।

इस विधि के अनुसार क्रय प्रतिफल की गणना करते समय निम्नलिखित बिंदुओं को ध्यान में रखा जाता है —

— (i) संपत्तियों के योग में उन सभी संपत्तियों को शामिल किया जाता जिसे क्रेता कंपनी द्वारा ली गई है।

(ii) काल्पनिक संपत्तियों जैसे - Preliminary Expenses, Discount on issue of Debentures and shares, Advertisement Expenses.

(iii) दायित्वों में Equity share capital, Reserve & Surplus को शामिल नहीं किया जाता है।

(iv) Goodwill को शामिल करते हैं तब उसे पुनर्मूल्यांकित मूल्य पर शामिल किया जाता है।

5(b) आन्तरिक मूल्य विधि (Intrinsic value Method):— यह विधि मूलतः सम्पत्ति विधि पर आधारित है, इसके अनुसार क्रय प्रतिफल की गणना हस्तांतरक कंपनी के अंशों के आन्तरिक मूल्य के आधार पर की जाती है। अर्थात्

$$\text{Intrinsic value} = \frac{\text{Net Assets}}{\text{No. of shares}}$$

— x —